श्रीसीतारामाभ्यां नमः

दुर्वादध्यान्तमार्तण्ड जगद्गुरुश्रीराघवानन्दाचार्य

सिद्धसम्राट् प्रणीता

श्रीराघवेन्द्रमङ्गलमाला

राघवेन्द्रं नमस्कृत्य हर्यानन्दं गुरुं तथा ।
कुर्वे मङ्गलमालां श्रीराघवेन्द्रस्य तुष्टये ॥१॥

श्रीहनुमते नमः

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकाराय नमोनमः

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य

श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

प्रणीता

बालबोधिनी

सीताकान्तसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।
रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

श्रीसम्प्रदाय के २१ वें आचार्य सिद्ध सम्राट् जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी श्रीराघवेन्द्र मङ्गलमाला दिव्य प्रबन्ध के निर्माणारम्भ में शास्त्रानुमोदित शिष्य शिक्षा के लिये मंगलाचरण करते हैं '**राघवेद्रम्**' इति । सर्व जीवान्तर्यामी सर्वेश्वर श्रीरघुकुलभूषण श्रीराघवेन्द्र सरकार को सादर दण्डवत प्रणाम करके श्रीसम्प्रदाय के २० वें आचार्य मेरे श्रीगुरुदेव जगद्गुरु श्रीहर्यानन्दाचार्यजी को भी सादर दण्ड-

मङ्गलानां निवासाय जगन्मङ्गलकारिणे ।
मङ्गलैकस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२॥
श्रीजानकीनिवासाय श्रीसाकेतनिवासिने ।
निखिलान्तर्निवासाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३॥
सीताकान्ताय शान्तायानन्तपापान्तकारिणे ।
अनन्तरूपरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४॥

वत प्रणाम करके सर्व जगन्नियन्ता सर्वेश्वर श्रीराघवेन्द्र की तुष्टि के लिये श्रीराघवेन्द्र मङ्गलमाला नामके दिव्य प्रबन्ध की रचना करता हूँ ॥१॥

सभी मंगलों के निवास स्थान तथा सर्व जग का मंगल करनेवाले मंगलों के एक मात्र स्वरूप अर्थात् मंगल रूप श्रीविग्रह वाले सव जीवों के आधारभूत सर्वेश्वर श्रीराघवजी का मंगल हो ॥२॥

अपने से अभिन्न स्वरूपा सर्वेश्वरी श्रीजानकीजी के हृदय में सर्वदा निवास करनेवाले और दिव्यधाम साकेत में निवास करनेवाले तथा सम्पूर्ण चराचर जगत् के अन्तःकरण में निवास करनेवाले सर्वव्यापक रघुकुल शिरोमणि श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥३॥

सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के अति प्रिय आराध्य पतिदेव अति शान्त स्वरूप और अनन्त पाप समूहों को अन्त अर्थात् नाश करनेवाले अनन्तरूप यानी विश्वरूप स्वरूप वाले सर्वान्तर्यामी रघुकूलभूण श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥४॥

प्रपन्नानन्ददात्रे च प्रपन्नार्तिविनाशिने ।
अविनाशिस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ।।५।।
वाञ्छाकल्पलताराम लोकाभिराममूर्त्तये ।
सकलापद्विरामाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ।।६।।
सर्वविद्याधिराध्यायाविद्याशून्यपरात्मने ।
वेदवेद्यानवद्याय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ।।७।।

प्रपन्न अर्थात् अपने शरण में आये हुये जीवों को आनन्द प्रदान करनेवाले यानी "**सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम**" इस अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार हे राम ? मैं आपका हूँ मेरी रक्षा करें इसप्रकार सर्वतोभाव से प्रपन्न जनों को सर्वभूतों से सर्वदा के लिये अभय प्रदान करनेवाले तथा प्रपन्न जनों के दुखों को सर्वतोभाव से नाश करनेवाले स्वयं अविनाशि स्वरूप अर्थात् नित्य कूटस्थ अविचल सर्वदा एक रस रहनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ।।५।।

मनुष्यों की वाञ्छा अर्थात् इच्छा रूप कल्पलता के आराम यानी बगीचा स्वरूप अर्थात् स्वशरणापन्न मानव की सम्पूर्ण इच्छाओं की पूर्ति करनेवाले लोकाभिराम लोकोत्तर सुन्दर श्रीविग्रह वाले तथा सम्पूर्ण आपत्तियों का अन्त करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ।।६।।

वेद वेदान्तों में कथित सम्पूर्ण सद्विद्याओं से समा-

चिदचिद्भ्यां विशिष्टाय शिष्टपक्षसुरक्षिणे ।
सच्चिदानन्दरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८॥
ब्रह्मणे परिपूर्णाय कार्यकारणरूपिणे ।
शार्ङ्गिणे पूर्णकामाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९॥

राधित श्रीचरणकमल वाले और अविद्या से सर्वथा रहित परमात्मा-परब्रह्म तथा वेद वेद्य अर्थात् वेदों से ही यथार्थ रूपसे जाने जा सकनेवाले अनवद्य यानी सर्वतोभाव से अनिन्दित स्वरूप अर्थात् विशुद्ध रूपवाले सर्वेश श्रीरामजी का मंगल हो ॥७॥

चित्-चेतन तत्त्व जीवादि तथा अचित्-अचेतन तत्त्व प्रकृति आदि से विशिष्ट यानी युक्त तात्पर्य यह कि सर्वेश्वर श्रीरामजी विशेष्य हैं अन्य जीव प्रकृति आदि सभी तत्त्व विशेषण हैं जो श्रीरामजी से कभी भी अलग नहीं होते अतः शास्त्रकारों ने अपृथक् सिद्ध विशेषण कहा है ऐसे अपने से अलग न होनेवाले चित् तथा अचित् विशेषणों से सम्बद्ध तथा शिष्टों के पक्षको सुरक्षित करनेवाले अर्थात् सनातन वैदिक मर्यादाओं के पालक तथा पालन करानेवाले सत् चित् तथा आनन्द स्वरूप परब्रह्म श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥८॥

इस सम्पूर्ण संसार के कार्य तथा कारण रूपसे स्थित परिपूर्ण परात्पर परब्रह्म शार्ङ्ग धनुषको धारण करनेवाले पूर्ण काम श्रीराघवजी का मंगल हो ॥९॥

भक्ततन्त्रस्वतन्त्राय भक्ताभिष्टार्थदायिने ।
भक्त्यामुक्तिप्रदात्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम्॥१०॥
सर्वशक्तिमते सर्वशेषिणे सर्ववेदिने ।
सर्वसम्पद्विधात्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥११॥
त्याज्यवर्ज्याय पूज्यायानन्तश्रेयोगुणाब्धये ।
सर्वेषां चित्तचौराय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१२॥

अपनी आराधना करनेवाले भक्तों के अनुकूल रहते हुये भी सर्वदा स्वतन्त्र स्वरूप से रहनेवाले तथा भक्तों के इच्छित वस्तुओं को प्रदान करनेवाले अनन्या भक्ति वाले साधक को अपनी सायुज्य मुक्ति को देनेवाले राघवेन्द्र श्रीरामजी का मंगल हो ॥१०॥

सम्पूर्ण शक्तियों के आधारभूत यानी सव शक्ति से युक्त सव चराचर जगत् के शेषी तथा विद्या प्रभृति सभी स्वरूप को जाननेवाले और स्वशरणापन्न जनों को सभी प्रकार के सम्पत्ति का विधान करनेवाले रघुकुलभूषण श्रीराघवजी का मंगल हो ॥११॥

त्याग करने योग्य गुणों से रहित और श्रेष्ठ जनों से पूजनीय तथा अनन्त श्रेय गुणों के महासमुद्र अथवा सभी जनों के चित्त को चुरानेवाले यानी सर्वजन मन मोहक लोकोत्तर सुन्दर दिव्य शरीरवाले सर्वाराध्य श्रीराघवेन्द्रजी का मङ्गल हो ॥१२॥

संहर्त्रे चास्यविश्वस्य कर्त्रे भर्त्रे तथैव च ।
कीर्त्तनात्तारयित्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१३॥
दिव्यदेहाय हृद्याय दिव्यालङ्कारधारिणे ।
दिव्यपरिकरायाथ राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१४॥
व्यापिनेऽन्तर्बहिश्चास्य सर्वस्य जगतः सते ।
अद्वितीयस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१५॥
श्रीकौशल्यातनूजाय श्रीसरयूविहारिणे ।
चक्रवर्त्तिकुमाराय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१६॥

इस सम्पूर्ण विश्व का कर्ता-उत्पन्न करनेवाले तथा भर्ता-पालन करनेवाले तथैव अन्तिम में संहार करनेवाले और श्रीराम नामका संकीर्तन करनेवालों को भवसागर से पार तारदेनेवाले सर्वशरण्य श्रीराघवजी का मंगल हो ॥१३॥

सत् चित् आनन्द रूप दिव्यातिदिव्य देहवाले सर्वलोकोत्कृष्ट दिव्य अलंकारों को धारण करनेवाले तथा सर्वजन हृदय को मोहित करनेवाले यानी सर्वजन प्रिय और दिव्य परिकरों-सेवकों से युक्त श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥१४॥

त्रिकालावाधित सत् स्वरूप इस सम्पूर्ण जगत् के अन्दर तथा बाहर से पूर्णतया व्यास तथा अद्वितीय स्वरूपवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥१५॥

श्रीकौशल्या देवी के तनूज यानी प्रिय पुत्र तथा

ताडकाघातिने विश्वामित्रस्य यज्ञरक्षिणे ।
अहल्योद्धारकाराय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१७॥
जनकाराधितायाथ शम्भुचापविभेदिने ।
जानकीपरिणेत्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१८॥
मिथिलाधिपजामात्रे मिथिलामोहकारिणे ।
जामदग्न्यविजेत्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१९॥

चक्रवर्ति दशरथ राजकुमार श्रीसरयू के तट में विहार करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥१६॥

लोक घातिनी ताड़का का अन्त करके मुक्ति देनेवाले और मारिच सुबाहु आदि राक्षसों का अन्तकर महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करनेवाले तथा गोतम मुनिके शाप से शीला होकर अनेकों वर्षों से रह रही अघरूपा अहल्या को स्वचरण रज कण के स्पर्श मात्र से उद्धार करनेवाले सर्व पतीतोद्धारक श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥१७॥

मिथिलाधिराज श्रीजनक के द्वारा सुसम्मानित तथा विश्व विश्रुत श्रीशम्भु के चापको अनायास तोड़ देने से त्रिभुवन विजय उपाधि से सर्व राज समाज में सम्मानित होकर पृथिवी कुमारी श्रीजनकराज दुलारी श्रीजानकीजी के साथ परिणय-विवाह करनेवाले सर्व विजयी श्रीराघवेन्द्रजी का सर्वतोभाव से मंगल हो ॥१८॥

मिथिलाधिराज श्रीजनक के जमाई तथा समस्त

अङ्कितायं निषादेन तीर्थराजं गताय च ।

वनवासेन हृष्टाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२०॥

चित्रशक्तिनिधानाय चित्रकूटविहारिणे ।

पर्णशालाधिवासाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२१॥

मिथिला वासीजनों को अपनी लावण्यता से मोहित करनेवाले और महर्षि जमदग्नि पुत्र सर्व क्षत्रीय दमन करनेवाले श्रीपरशुरामजी को अपने तेज मात्र से जीतनेवाले सर्व विजयी श्रीराघवेन्द्रजी का सदा मंगल हो ॥१९॥

निषादाधिपति से भक्तिभाव पूर्णता से पूजित सेवित होकर तीर्थराज प्रयाग पहूँचकर महर्षि भरद्वाज का दर्शन करनेवाले और महर्षियों के निर्देशानुसार वन अर्थात् चित्रकूट में निवासकर प्रसन्न होने तथा सबको प्रसन्न करनेवाले सर्व सुख प्रद श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥२०॥

संसार की रचना पालन तथा संहार आदि अनन्त चित्र-आश्चर्य जनक विचित्र शक्तियों के निधान-आदि कारण एक मात्र आश्रय रूप तथा दिव्यधाम श्रीचित्रकूट में विहार करनेवाले और श्रीचित्रकूट व श्रीपञ्चवटी में लोकोत्तर चमत्कार कारक पर्णशाला में सुख पूर्वक स्वानन्या प्रिया श्रीवैदेहीजी तथा श्रीलक्ष्मणजी के साथ निवास करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥२१॥

भरतेनानुनीताय पितुरादेशकारिणे ।
रक्षोबधप्रतिज्ञात्रे राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२२॥
सीतासौमित्रियुक्ताय चापिने बाणिने तथा ।
खरदूषणहन्त्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२३॥
मारीचमृत्युकाराय शवर्याराधिताय च ।
मुनीन्द्रैर्विहीतार्चाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२४॥
वानरेन्द्रस्य मित्राय बालिमुक्तिविधायिने ।
प्रवर्षणाधिवासाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२५॥

चित्रकूट से वापस अयोध्या जाकर राज्य स्वीकार करने के लिये श्रीभरतजी द्वारा विनीत भाव से संप्रार्थित होने पर भी पिताजी के आदेश पालनकर चौदह वर्षों तक वन में ही रहनेवाले तथा राक्षसों के बधके लिये "**निशीचरहीन करहूँ मही भुज उठाई प्रण कीह्न**" इस प्रकार प्रतिज्ञा करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥२२॥

श्रीसीताजी तथा श्रीलक्ष्मणजी से युक्त और लोकोत्तर चमत्कारक अद्वितीय धनुष तथा बाण को धारण करनेवाले और खरदूषण तथा त्रिशिरा आदि राक्षसों का बध करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥२३॥

राक्षस मारीच का बध करनेवाले तथा अनन्य भक्ता शबरी से प्रेम पूर्वक आराधित और अरण्य वासी अनेक मुनियों से वैदिक विधान से पूजित श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥२४॥

वानरेन्द्र श्रीसुग्रीव के मित्र और बालि को मुक्ति

हनुमत्प्रार्थितायाथ हनुमत्सेविताङ्घ्रये ।
हनुमत्प्रेषयित्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२६॥
सीताशोकविमुग्धाय सीतान्वेषणकारिणे ।
सीतायाः शोकहर्त्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२७॥
विभीषणशरण्याय सिन्धौ सेतुविधायिने ।
उल्लङ्घितसमुद्राय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२८॥
योलङ्काधिपसंहारी लङ्कां श्रिताय योऽददात् ।
तस्मै लङ्काविजेत्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥२९॥

देनेवाले तथा प्रवर्षण गिरि पर निवास करनेवाले श्रीराघवजी का मंगल हो ॥२५॥

श्रीहनुमानजी से सम्प्रार्थित तथा सर्वदा सेवा परायण अनन्य सेवक श्रीहनुमानजी से संसेवित श्रीचरणकमल वाले और श्रीजानकीजी के शोध के लिये अन्तरंग दूत बनाकर श्रीहनुमानजी को लङ्का भेजनेवाले सर्वजन सेवित सर्वाराध्य श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥२६॥

श्रीसीताजी के शोक से विमुग्ध यानी मोहित तथा श्रीसीताजी का शोध करानेवाले और श्रीसीताजी के शोक को हरण करनेवाले श्रीरामजी का मंगल हो ॥२७॥

विभीषणजी को शरण में रखनेवाले तथा समुद्र में सेतु का निर्माण कर वानरी सेना के साथ समुद्र को पार करनेवाले श्रीरामजी का मंगल हो ॥२८॥

जो लंका के अधिप रावण का संहार करनेवाले हैं

श्रीमते रघुवीराय रणधीराय धन्विने ।
समाभ्यधिकशून्याय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३०॥
ब्रह्मशम्भुसुरेन्द्रादि सुरश्रेष्ठस्तुताय च ।
कृतसीतापरीक्षाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३१॥
मैथिलीमधिगम्याथ पुष्पकारोहिणे मुदा ।
अयोध्यानन्दकर्त्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३२॥

तथा जिसने शरण में आये हुये श्रीविभीषणजी को समृद्धशाली लंका को प्रदान किया उन लंकाविजयी श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥२९॥

ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, तथा वैराग्यरूप षडैश्वर्य विभूषित रघुवीर तथा अदम्य पराक्रमतया धनुषवाण धारणकर संग्रामभूमि में अतिधीर रूपसे स्थित रहनेवाले और अपने से अधिक या समान ऐश्वर्यादि से रहित सर्व स्वरूप श्रीरघुकुल मणि श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥३०॥

श्रीब्रह्माजी श्रीशंकरजी तथा सुर श्रेष्ठ इन्द्र प्रभृति सभी देवताओं से पुरुषसूक्त विधान से संस्तुति किये गये तथा श्रीसीताजी की अग्नि परीक्षा करनेवाले श्रीराघवजी का मंगल हो ॥३१॥

अग्नि परीक्षा के वाद श्रीसीताजी को प्राप्तकर प्रसन्नता पूर्वक सभी सेवकों के साथ पुष्पक विमान पर आरूढ़ होकर श्रीअयोध्या पहूँचकर वहाँ सभी विरही जनों को आनन्दित करनेवाले श्रीरामजी का मंगल हो ॥३२॥

स्वामिने कोशलेन्द्राय रामराज्य प्रवर्तिने ।
राजाधिराजराजाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३३॥
भूमिजावल्लभायाथ भूमिनाथाय धर्मिणे ।
दानिने सार्वभौमाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३४॥
लोकाभिरामरूपाय लोकाभिरामकर्मणे ।
लोकाभिरामभावाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३५॥
सीताशोभितवामाय सीताचित्तविनोदिने ।
सीतायाः प्राणरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३६॥

सर्व जगत के स्वामी तथा कोशल राज्याधिराज के सर्वाधिप और राम राज्य का प्रवर्तन करनेवाले सर्व राजाधिराजा महाराज श्रीराघवेन्द्रजी सरकार का मंगल हो ॥३३॥

भूमिजा जगत् जननी श्रीसीताजी के अत्यन्त प्रिय तथा सर्व धर्म के आधार स्तम्भरूप और समस्त भूमि के एकमात्र मालिक तथा सर्वस्व दान कर देनेवाले सार्वभौम सम्राट् श्रीराघवजी का मंगल हो ॥३४॥

सर्वलोक मनोहर दिव्याकृतिवाले तथा सर्वलोकोपयोगि सनातन वैदिक कर्म करनेवाले और सर्वलोकाभिराम-दिव्यातिदिव्य भावनावाले सर्व समर्थ श्रीरामजी का मंगल हो ॥३५॥

श्रीसीताजी से सुशोभित वाम भाग वाले तथा श्रीसीताजी के चित्तको आनन्दित करनेवाले और श्रीसीताजी के प्राण स्वरूप श्रीरामजी का मंगल हो ॥३६॥

जनानां स्वानुरक्तानामयोध्यावासिनां सताम् ।
मोक्षप्रदानकर्त्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३७॥
विपरितेषु कालेषु क्षीणबन्धोश्च बन्धवे ।
सर्वस्वाय स्वभक्तानां राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३८॥
कप्यासपुण्डरीकाक्षपीतकौशेय वाससे ।
मेघश्यामाभिरामाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥३९॥
अनाथानाञ्च नाथाय धर्मगोद्विजरक्षिणे ।
जगद्धिताय रामाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४०॥

अपने में अनुरक्त सभी सज्जन जनों तथा समस्त अयोध्या वासी जनों को सायुज्य मोक्षरूप अपना दिव्यधाम प्रदान करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥३७॥

विपरीत काल यानी आपत्ति के समय के एकमात्र आधाररूप तथा बन्धु-बान्धव सगे-सम्बन्धी से रहित जनों के एकमात्र भरोसा पात्र बन्धु स्वरूप और अपने भक्तों के सर्वस्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥३८॥

पूर्ण रूपसे खिले हुये सूर्य के समान देदिप्यमान मुखाकृति तथा शरद कालिन कमल के समान संदिस नेत्रवाले और पीत कौशेय वस्त्र को धारण किये हुये तथा शरद कालिन मेघ के समान श्याम आकृति होने से सभी जनों को अत्यन्त सुन्दर लगनेवाले यानी सर्व जनमन मोहक श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥३९॥

अनाथों यानी आश्रय रहित मानवों के एकमात्र नाथ

समुद्धाराय वेदानां स्वस्वरूपनिवेदिनाम् ।
धृतमत्स्यस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४१॥
देवेभ्योऽमृतदानाय मन्दराचलधारिणे ।
कूर्मावताररूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४२॥
विश्वम्भरां समुद्धर्तुं दैत्येनमलिनीकृताम् ।
धृतवाराहरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४३॥
प्रह्लादं च पितुस्त्रासाद् गोपित्वाह्लादकारिणे ।
नरसिंहस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४४॥

अर्थात् आश्रय दाता तथा सनातन वैदिक श्रीवैष्णव धर्म गो तथा द्विजों के रक्षक और सम्पूर्ण जगत् का हित करनेवाले अभिराम स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥४०॥

अपने सत् चित् तथा आनन्द स्वरूप पर ब्रह्म श्रीराम तत्त्व को वतलानेवाले वेदों के उद्धार के लिये मत्स्य अवतार को धारण करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥४१॥

देवताओं को अमृत प्रदान करने के लिये अमृत मथन प्रसंग में डूवते हुये मन्दराचल पर्वत को धारण करने के लिये कूर्म अवतार को धारण करनेवाले श्रीरामजी का सदा मंगल हो ॥४२॥

दिती पुत्र हिरण्याक्ष दैत्य के वस होकर मलिन हुई पृथिवी के उद्धार के लिये श्रीवाराह अवतार को धारण करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का सदा मंगल हो ॥४३॥

भक्तराज प्रह्लादजी को उनके पिता के विविध त्रासों

छलयित्वा बलिं भूयोदेवराज्यं प्रवर्त्तितुम् ।
धृतवामनरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४५॥
क्षितिं क्षत्रक्षयं कृत्वा ब्राह्मणेभ्यः समर्पिणे ।
जामदग्न्यस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४६॥
साधूनाञ्च परित्रात्रे संहार्य दुष्टराक्षसान् ।
दाशरथिस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४७॥
वंश्यालोकमनोहर्त्रे गीतयाऽज्ञानहारिणे ।
धृतकृष्णस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४८॥

से संरक्षण करने के लिये श्रीनरसिंह स्वरूप धारण कर हिरण्यकशिपु का वधकर श्रीप्रह्लादजी के साथ अन्य स्वजनों को भी आह्लादित करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥४४॥

भक्त प्रवर बलि को छलकर पुनः देवता राज्य प्रवतित करने के लिये श्रीवामनावतार धारण करनेवाले श्रीरामजी का मंगल हो ॥४५॥

इक्कीस वार पृथिवी को दुष्ट क्षत्रिय रहित करके ब्राह्मणों को पृथिवी का समर्पण करनेवाले श्रीपरशुराम स्वरूप श्रीरामजी का मंगल हो ॥४६॥

रावणादि सम्पूर्ण दुष्ट राक्षसों का संहार कर श्रीविभीषणादि शरणापन्न साधुजनों की रक्षा करने के लिये श्रीदाशरथि राम का स्वरूप धारण करनेवाले परात्पर परब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी का सर्वदा मंगल हो ॥४७॥

वंशी के नाद से लोगों के मनको अपहरण करनेवाले

देवद्विषोऽथ संमोह्य श्रौतधर्मस्य गुप्तये ।
धृतबुद्धस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥४९॥
कलौ कलिं विनाश्याथ कृतधर्मप्रवर्त्तिने ।
धृतकल्किस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५०॥
सर्वेषामवताराणां मूलाय परमात्मने ।
विभूतिमृतलोकाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५१॥

तथा गीता के दिव्य ज्ञानोपदेश द्वारा सव लोगों के अज्ञान को अपहरण करने के लिये श्रीकृष्णावतार को धारण करनेवाले रघुकुल श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥४८॥

सनातन वेद से द्वेष करनेवाले लोगों को संमोहित कर सनातन धर्म प्राण रूप वैदिक धर्म की रक्षा के लिये श्रीबुद्धावतार धारण करनेवाले सर्वेश श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥४९॥

कलियुग में कलि धर्म का विनाशकर सत्ययुग के धर्म का प्रवर्तित करने के लिये कल्कि अवतार धारण करनेवाले सर्वावतारी सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥५०॥

मत्स्य कूर्मादि समस्त अवतारों के मूलकारण रूप परात्पर परमात्मा तथा अपनी विभूति मात्र से ही समस्त लोक को धारण करनेवाले सर्वाधार श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥५१॥

अणोरणीयसे तद्वन्महतोऽपिमहीयसे ।
सर्वानुशास्तिकाराय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५२॥
आदित्यतुल्यवर्णाय तमसः पारवर्तिने ।
कवयेऽचिन्त्यरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५३॥
सर्वहृत्सन्निविष्टाय स्मृत्युत्पादविनाशिने ।
वेदकृद्वेववन्द्याय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५४॥
नमतां स्वमनस्कानां स्वभक्तानां स्वयाजिनाम् ।
स्वप्राप्तिः कुर्वते नित्यां राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५५॥

छोटे से छोटे यानी अत्यन्त छोटे पदार्थ में व्याप्त रहनेवाले महान् से भी महान् पदार्थ में व्याप्त रहकर छोटे बड़े सभी को अनुशासन करनेवाले सबके नियामक श्रीराघवजी का मंगल हो ॥५२॥

आदित्य-द्वादश सूर्य के समान देदिप्यमान वर्णवाले तथा तमस-अन्धकार से पर दिव्यधाम श्रीसाकेत में निवास करनेवाले अचिन्त्य स्वरूप कवि-क्रान्तदर्शी श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥५३॥

सम्पूर्ण तत्त्वों का संहरण करनेवाले तथा सत् तत्त्वों में अन्तर्यामी रूपसे समवस्थित और स्मृति उत्पाद तथा विनाशादि कर्मों का सम्पादन करनेवाले तथैव वेदों का सर्जन करनेवाले और वेदों से सर्वदा वन्दित यानी पूजित श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥५४॥

अनन्य निष्ठा से आपको नमन करनेवाले अपने भक्तों

उत्पत्तिध्वंसशून्याय मृत्योरप्यथ मृत्यवे ।
अपरिच्छिन्नरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५६॥
सत्यस्य वर्मणे लोकशर्मणेऽक्लिष्टकर्मणे ।
वर्ज्यायक्लेशकर्माभ्यां राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५७॥
सत्यप्रियाय सत्याय सत्यकृत्सत्यवेदिने ।
सत्यविश्वनिदानाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५८॥

को तथा वेद विधान से आपका यजन करनेवाले जनों को अपनी नित्य प्राप्ति रूप सायुज्य मुक्ति प्रदान करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥५५॥

उत्पत्ति तथा नाश से सर्वथा रहित और सर्व संहारक मृत्यु के भी मृत्यु रूप तथा अपरिच्छिन्न अर्थात् छोटे बड़े आदि किसी भी परिमाण से रहित सर्वेश श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥५६॥

सत्य संरक्षण के लिये कवच स्वरूप तथा सम्पूर्ण संसार का कल्याण करनेवाले और सर्वदा निन्दा रहित विशुद्ध कर्म का सम्पादन करनेवाले तथा क्लेश कर्म यानी अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश प्रभृति से रहित श्रीरामजी का मंगल हो ॥५७॥

सत्य प्रिय तथा सत्य स्वरूप और सत्य कर्म को करनेवाले तथैव सर्वदा सत्य वोलनेवाले और सत्य स्वरूप विश्व का आदि कारण श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥५८॥

अशरण्यशरण्याय देवदेवाय वेधसे ।
व्यक्तषाड्गुण्यचेष्टाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥५९॥
सर्वविश्वनियन्त्रे च परमैश्वर्यशालिने ।
सौलभ्यगुणयुक्ताय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६०॥
सर्वेभ्योऽभयदात्रे च सकृदेवप्रपत्तितः ।
उपेयोपायरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६१॥
रामेति कीर्त्तिते चापि यमदूतौघतर्जिने ।
भर्जित्रेभवबीजानां राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६२॥

शरण-आधार रहित जनों के एकमात्र रक्षक-आधार यानी शरणागत सर्वजन प्रतिपालक देवताओं के भी देवता तथा सर्व विश्व की सृष्टि करनेवाले महा पण्डित जिनमें उत्पत्ति प्रलय ज्ञान वैराग्यादि समस्त गुण यथार्थ रूपमें व्यक्त हैं ऐसे परात्पर स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥५९॥

सम्पूर्ण विश्व का नियन्त्रण करनेवाले और धर्म यश श्री ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य प्रभृति परम ऐश्वर्यों से सर्वदा सुशोभित रहनेवाले तथा सौलभ्य गुण से युक्त श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥६०॥

एकवार की प्रपत्ति-शरणागति से ही सभी जीवों को अभय प्रदान करनेवाले तथा सायुज्य मुक्ति प्राप्त करने के लिये या श्रीराम प्राप्ति के लिये उपाय यानी साधन तथा उपेय यानी प्राप्य स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥६१॥

अनायास से ही "**राम**" इन दो अक्षरों के कीर्तन-

भयाभयविधातारः सर्वे यच्छासने स्थिताः ।
तस्मै हि निखिलेशाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६३॥
अभयं प्रीणनाद्यस्य भयं यस्यावधीरणात् ।
तस्मै भगवतेनित्यं राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६४॥
यस्यानन्दविदेभीतिर्विद्यते न कुतश्चन ।
तस्मा आनन्दयुक्ताय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६५॥

उच्चारण मात्र से यमदूत के समूहों को दूर भगाकर उसे अभय करनेवाले तथा श्रीरामनाम जापक के संसार रूपी बीज को भूंजने यानी नष्ट करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥६२॥

भय तथा अभय का सम्पादन करनैवाले अर्थात् पाप परायण जन शासक यमप्रभृति तथा सत् कर्म परायण जन समुपरक्षक श्रीविष्णु प्रभृति सव देवगण जिन सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के शासन में रहते हैं उन सर्व देव प्रभृति के प्रशासक सर्वेश श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥६३॥

जिनकी आराधना से प्रसन्न होने पर प्राणियों को सर्व प्रकार से अभय प्राप्त हो जाता है तथा जिनकी आराधना-सेवा न करके अवहेलना करने पर भय-अधोगति नरकादि की प्राप्ति होती है उन षडैश्वर्यशाली सर्व समर्थ श्रीराघवेन्द्रजी का सदा मंगल हो ॥६४॥

जिन आनन्द स्वरूप श्रीराघव का वास्तविक ज्ञान हो जाने पर जीवों को कहीं से किसी प्रकार की भी भीति

प्राणानां प्राणरूपाय ज्योतिषां ज्योतिषे तथा ।
सूर्यान्तर्वासशीलाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६६॥
नित्यानामपि नित्यो यश्चेतनानाञ्च चेतनः ।
तस्मै कामप्रदात्रे हि राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६७॥
चिदचित्तत्त्वदेहाय चिदचिद्व्यापिने तथा ।
चिदचित्तत्त्वभिन्नाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६८॥
सहस्त्रबाहुपादाय सहस्त्रशिरसे तथा ।
सहस्त्राननेत्राय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥६९॥

नहीं रहती है उन आनन्दमय श्रीराघवेन्द्रजी का सर्वदा मंगल हो ॥६५॥

प्राणों के भी प्राण स्वरूप तथा ज्योति के भी ज्योति स्वरूप और सर्वदा सूर्य के अन्दर रहकर सर्व संसार को प्रकाशित करनेवाले श्रीरामजी का मंगल हो ॥६६॥

जो नित्य स्वरूपसे प्रसिद्ध जीव प्रभृति से भी नित्वत्वेन प्रसिद्ध हैं तथा जो चेतनतया प्रसिद्ध जीव प्रभृति को भी चेतित करनेवाले चेतन स्वरूप हैं ऐसे सर्व कामना प्रद श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥६७॥

चित् तथा अचित् तत्त्वरूप दिव्यदेह वाले तथा चित् और अचित् तत्त्वों को व्याप्त करके रहनेवाले होकर भी चित् तथा अचित् तत्त्व से भिन्न अतिविलक्षण स्वरूप वाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥६८॥

हजारों हाथ तथा हजारों पैर वाले और हजारों शिरवाले

मूर्त्तामूर्त्तस्वरूपाय तथैकानेकमूर्त्तये ।
दूरादूरस्थितायाथ राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७०॥
भवसन्तापसन्तप्तजनानां खिन्नचेतसाम् ।
कटाक्षामृतदात्रे च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७१॥
देहसौन्दर्यसम्पत्त्या सर्वलोकनिवासिनाम् ।
सुतरां मोहकाराय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७२॥
रमन्ते योगिनो यस्मिन् सत्यानन्दे चिदात्मनि ।
तस्मै सर्वाभिरामाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७३॥

तथा हजारों मुह और आँख वाले विश्वरूप स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥६९॥

मूर्त तथा अमूर्त यानी लक्ष्य और अलक्ष्य स्वरूपवाले तथा अन्यों से विलक्षण एक मूर्त्ति होते हुये भी अनेक विचित्र मूर्तिवाले तथैव अत्यन्त दूर और अत्यन्त समीप में अवस्थित-रहनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥७०॥

संसार रूप संताप से अति संतप्त होकर खिन्न चित्त होकर अपने शरण में आये जनों को अपनी करुणामय कटाक्षरूप अमृत का सिंचन से अभयकर देनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥७१॥

अप्राकृतिक दिव्य शरीर की सुन्दरतारूपी सम्पत्ति के द्वारा सम्पूर्ण लोक में नियत रूपसे निवासकर सर्वतोभाव से सव जीव वर्गों को मोहित करनेवाले श्रीरामजी का मंगल हो ॥७२॥

जिन सर्व रमणशील सर्वेश्वर सत् चित् तथा आनन्द

सत्वादिगुणशून्यत्वान्निर्गुणाय महात्मने ।
सद्गुणैः सगुणायापि राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७४॥
सर्वार्चनार्चनीयाय सर्वेभ्यः फलदायिने ।
सर्ववाचकवाच्याय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७५॥
वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा ।
पाञ्चरात्रे च गीताय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७६॥

स्वरूप श्रीरामजी में योगिजन सर्वदा रमण करते हैं उन सर्वाभिराम-लोकोत्तर सुन्दर स्वरूप श्रीरामचन्द्रजी का सर्वदा मंगल हो ॥७३॥

सत्व रज तम प्रभृति हेयगुणों से रहित होने से निर्गुण रूपसे जाने जाने वाले तथा अप्राकृतिक समस्त सद्गुणों से सर्वदा सम्पन्न रहने के कारण सगुण रूपसे सर्व वेदादि शास्त्रों में प्रसिद्ध परात्पर परमात्मा श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥७४॥

कायिक वाचिक मानसिक या अन्य सभी प्रकार के पूजा योग्य सामग्री से सदा पूजा करने योग्य तथा आराधना करनेवाले सभी जनों को निस्पक्षतया यथायोग्य फल प्रदान करनेवाले और वैदिक लौकिक प्रभृति सभी शब्दों से वाच्य श्रीरामजी का मंगल हो ॥७५॥

सभी वेद श्रीमद्रामायण महाभारत सभी पुराण तथा पाँचरात्र आगमों द्वारा दिव्य चरितों का सर्वदा गान किये गये सर्व गेय श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥७६॥

निगमैर्मेधया चापि तपसा यो न लभ्यते ।
तस्मै भक्त्येकलभ्याय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७७॥
कर्माद्यपरतन्त्राय पूर्णषाड्गुण्यमूर्तये ।
अच्युतायाविकाराय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७८॥
शश्वद् भक्तसमूहस्य सद्योगक्षेमवाहिने ।
प्रधानपुरुषेशाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥७९॥
पुरुषायोत्तमायाथ क्षराक्षरपराय च ।
परमात्माभिधानाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८०॥

जो सर्वेश्वर श्रीराम वेदों के अध्ययन शुष्कज्ञान या तपश्चर्या से प्राप्त नहीं होते हैं परन्तु केवल अनन्य भक्ति से ही प्राप्त किये जा सकते हैं ऐसे श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥७७॥

शुभ तथा अशुभ कर्मों के अधीन नहीं रहनेवाले तथा ज्ञान ऐश्वर्यादि छ गुणों से संयुक्त दिव्य मूर्तिवाले सर्वदा निर्विकार रूप अच्युत स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥७८॥

शरणागत भक्त समूहों के योगक्षेम को सर्वदा वहन करनेवाले सर्वेश्वर प्रधान पुरुष श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥७९॥

सर्वोत्तम पुरुष तथा क्षर और अक्षर से भी पर होने के कारण परमात्मा यानी परात्पर ब्रह्म इस नामसे सर्वजन तथा शास्त्र प्रसिद्ध श्रीरामजी का मंगल हो ॥८०॥

योगिनां ध्येयवन्द्याय ज्ञेयाय भवहारिणे ।
महापुरुषसंज्ञाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८१॥
विष्णवे विबुधारातिजिष्णवे प्रभविष्णवे ।
सर्वलोकैकनाथाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८२॥
जगतो गुरवे सर्वजगद्वन्द्याय धर्मिणे ।
अमोघायुधवृन्दाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८३॥
विज्ञानदानशीलाय पूर्णविज्ञानशालिने ।
विज्ञानधनरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८४॥

योगि जनों के ध्यान करने योग्य या योगियों से सर्वदा ध्यान किये गये तथा उन्हीं लोगों से सर्वदा वन्दित और अहर्निश गान किये गये तथा शरणापन्न जनों के संसार भयका अपहरण करनेवाले महापुरुष इस नामसे सर्वजन विश्रुत श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥८१॥

चराचर विश्व को व्याप्तकर रहनेवाले विष्णु रूप तथा देवताओं के शत्रुओं को जीतनेवाले सर्वदा मननशील प्रभविष्णु और सर्वलोक के एकमात्र नाथ यानी संरक्षक आधार रूप श्रीराघवेन्द्रजी का सर्वदा मंगल हो ॥८२॥

सम्पूर्ण संसार को सत् शिक्षा देनेवाले सत् गुरु तथा सर्व जगत् वन्द्य और सर्वजन पालन योग्य धर्म की शिक्षा देनेवाले परम धर्मात्मा तथा अमोघ धनुषवाण आदि आयुध समूहों का धारण करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥८३॥

सभी शरणागत जीवों को विशिष्ट ज्ञान प्रदान करने

दैवताय च देवानां श्रुतीनां दिव्यचक्षुषे ।
योगनेत्राञ्जनायाथ राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८५॥
अपादायोरूपादायापाणये चोरूपाणये ।
अनेत्रायोरुनेत्राय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८६॥
अकर्णायोरुकर्णाय ह्यदेहायोरुदेहिने ।
अरुपायोरुरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८७॥

वाले तथा पूर्ण विज्ञान स्वरूप वाले और विज्ञान धनरूप यानी ज्ञान से व्याप्त स्वरूपवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥८४॥

देवताओं के भी देवता तथा श्रुतियों के दिव्य नेत्र स्वरूप और योग रूप नेत्रो के अंजन स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥८५॥

सामान्य प्राकृत जनों के समान पैर न होते हुये भी प्रसस्त यानी अनन्त दिव्य पैर वाले तथा अन्य जनों के समान हाथ न होते हुये भी अनेक दिव्यातिदिव्य हाथवाले और प्राकृत सामान्य नेत्रों से रहित होते हुये भी अनन्त दिव्य नेत्रवाले श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥८६॥

सामान्य जनों के समान कान से रहित होते हुये भी अनन्त दिव्य कानवाले तथा प्राकृत देह से वर्जित होते हुये भी अप्राकृत अनन्त दिव्य देहवाले अरूप होते हुये भी अनन्त दिव्य रूपवाले सर्व स्वरूप अनन्त दिव्यातिदिव्यात्मा श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥८७॥

लोकैकसेतवे तद्वत् सर्वलोकैककहेतवे ।
सेतवेभवपाथोधे राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८८॥
भवन्त्यानन्दिनो जीवा यं रसं प्राप्य शाश्वतम् ।
तस्मै रसस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥८९॥
ससुरस्य सुरेन्द्रस्यासुराणां ब्रह्मशूलिनोः ।
आराध्याय नराणाञ्च राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९०॥
प्राणाय वैष्णवानाञ्च चिन्तयित्रे च कूर्मवत् ।
कल्पपादपरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९१॥

सम्पूर्ण लोक का एकमत्र सेतु-सर्व संयोजक रूप तथा सव लोक को उत्पन्न करनेवाले एकमात्र प्रधान कारण स्वरूप और संसार रूप समुद्र से पार उतरने के लिये सेतु रूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥८८॥

सम्पूर्ण जीव वर्ग जिन शाश्वत रसरूप श्रीरामचन्द्रजी को प्राप्त करके सर्वदा आनन्दित होते हैं उन परमानन्द रस स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥८९॥

समस्त देवताओं के साथ इन्द्र तथा सम्पूर्ण असुर और ब्रह्मा तथा शंकर और समस्त मनुष्यों से आराध्य यानी इन सवों से सर्वदा आराधित सर्वाराध्य सर्वेश श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥९०॥

वैष्णवों के प्राण धनरूप तथा श्रीरामजी की चिन्तन करनेवालों के लिये कूर्म के समान यानी कछुवा जैसे सर्वतोभाव से आपत्ति-विपत्ति में अंग प्रत्यंग का रक्षण अपने ढ़ाल से करलेता है उसी प्रकार अपना स्मरण करने

नृत्यति निखिलं विश्वं यन्मायावशगं सदा ।
तस्मै चाद्भुतमायाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९२॥
तीर्यते यत्प्रपत्त्याहि दैवी माया दुरत्यया ।
तस्मै शरण्यवर्याय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९३॥
यं भजन् सुदुराचारः पुरुषश्चैति साधुताम् ।
अधमोद्धारिणे तस्मै राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९४॥
यस्य स्मरणमात्रेण बाह्याभ्यन्तः शुचिर्भवेत् ।
शुचीनां शुचये तस्मै राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९५॥

वाले की सर्वतोभाव से रक्षा करनेवाले और आराधकों को इच्छानुसार फल प्रदान करनेवाले कल्पवृक्ष स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥९१॥

जिन श्रीरामचन्द्रजी की माया के वश में स्थित सम्पूर्ण विश्व सर्वदा नाचता रहता है उन अति अद्भुत माया वाले श्रीरामजी का मंगल हो ॥९२॥

अति दुस्तर दैवी-श्रीरामजी की माया जिन श्रीरामजी की प्रपत्ति-शरणागति से तरी जा सकती है उन सर्व शरण्य श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥९३॥

जिन सर्वेश श्रीराघवजी के भजन करने से अति दुराचारि-महापापी पुरुष भी साधु-पाप मुक्त हो जाता है उन महा अधम जनों के उद्धार करनेवाले सर्व पतीत पावन श्रीरामजी का मंगल हो ॥९४॥

जिन पर पुरुष श्रीराघवजी के स्मरण करने मात्र से ही बाहर तथा अन्दर से मानव पवित्र हो जाता है ऐसे

यस्य कीर्तनमात्रेण न्यूनमायाति पूर्णताम् ।
तस्मै पूर्णस्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९६॥
यत्सेवा मोक्षसौधस्याकण्टका राजपद्धतिः ।
तस्मै सेव्यवरेण्याय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९७॥
सृष्टे विश्वे प्रविश्याथ नामरूपविभाजिने ।
ततः प्राक् सत्स्वरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९८॥
तोषयित्रे चकोराणां भक्तानां मूर्तिरश्मिभिः ।
चन्द्राय रामचन्द्राय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥९९॥

पवित्र को भी पवित्र करनेवाले श्रीराघवेन्द्रजी का सदा मंगल हो ॥९५॥

जिन परिपूर्ण स्वरूप श्रीरामजी के कीर्तन मात्र से ही न्यूनता पूर्ण हो जाती है उन पूर्ण स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥९६॥

जिन सर्वेश श्रीरामजी की सेवा सायुज्य मोक्षरूप घर की प्राप्ति के लिये कांटों से रहित राजमार्ग है ऐसे सर्वश्रेष्ठ सेवनीय श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥९७॥

अपने से ही पहले उत्पादित नाम तथा रूपसे रहित चराचर विश्व में अन्तर्यामी रूपसे प्रवेश करके समष्टि सृष्टि नाम तथा रूपों से अलग अलग विभाजन करनेवाले नाम रूप विभाग से पहले एकमात्र अखण्ड सत्स्वरूप से स्थित श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥९८॥

अपनी आराधना करनेवाले भक्त रूप चकोरों को अपनी

सर्वधर्मान् परित्यज्य शरणागतभावतः ।
मोचयित्रे च पापेभ्यो राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१००॥
भासयित्रे च भान्वादेर्भानुकोटिप्रभावते ।
स्वयम्प्रकाशरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१०१॥
समष्टिसृष्टिकराय व्यष्टिसृष्टिविधायिने ।
विरिञ्च्याद्यात्मरूपाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१०२॥
विश्वातीताय विश्वाय यं माया नातिवर्तते ।
मायाधिष्ठायिने तस्मै राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१०३॥

दिव्यातिदिव्य मूर्ति के किरणों से संतुष्ट करनेवाले चन्द्रमा रूप श्रीरामचन्द्रजी से अभिन्न श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥९९॥

अन्य सामान्य सभी धर्मों का त्यागकर अनन्य भावना से अपने शरण में आये हुये सभी जनों को सभी प्रकार के पापों से मुक्तकर सदा के लिये अभय कर देनेवाले श्रीरामजी का मंगल हो ॥१००॥

सूर्य चन्द्र आदि सभी प्रकाशमानों प्रकाशित करनेवाले करोड़ों सूर्य के समान प्रकाशवाले तथा स्वयं प्रकाश स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥१०१॥

समष्टि सृष्टि को स्वयं करके ब्रह्मा प्रभृति से व्यष्टि सृष्टि करवाने वाले ब्रह्मात्म स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ।१०२।

विश्व से अतीत यानी पर-विश्व से असंपृक्त होते हुये भी विश्व स्वरूपतया स्थित जिसको माया कभी भी अतिक्रमण नहीं करती अर्थात् जिसके ऊपर सर्व वशकारिणी

निराधाराय शक्ताय सर्वाधाराय मोदिने ।
स्वेमहिम्निस्थितायाथ राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१०४॥
धर्मार्थकाममोक्षाख्यपुरुषार्थप्रदायिने ।
अद्वितीयवदान्याय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१०५॥
संयुगे जातरोषं यं बिभ्यति विवुधादिकाः ।
तस्मै तेजोनिधानाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१०६॥
चारित्रेण च युक्ताय सर्वभूतहिताय च ।
जितक्रोधानसूयाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१०७॥

माया का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता है उन माया के अधिष्ठान यानी आधार श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥१०३॥

अपने से अतिरिक्त आधार से रहित तथा स्वयं सव विश्व के आधार और सभीको आमोद-प्रमोद प्रदान करने में सर्व शक्त अपने ही महिमा में स्थित सर्व स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥१०४॥

साधक जीवों को उसकी निष्ठा के अनुसार धर्म अर्थ काम तथा मोक्षरूप चारों पदार्थों का प्रदान करनेवाले अद्वितीय दयालु-परमोदार श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥१०५॥

संग्राम भूमि में क्रोधित हुये जिन श्रीरामचन्द्रजी को देखकर देव दैत्य यक्ष प्रभृति भयभीत हो जाते हैं उन तेज के आदि कारण स्वरूप श्रीराघवेन्द्रजी का मंगल हो ॥१०६॥

सच्चरित्र युक्त तथा सभी भूत प्राणियों का हित करनेवाले क्रोधजयी तथा ईर्ष्या-द्वेष से रहित श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥१०७॥

कथञ्चिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यते ।
धर्मज्ञाय कृतज्ञाय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१०८॥
न स्मरत्यात्मवत्त्वेन योऽपराधशतं किल ।
तस्मै क्षमासमुद्राय राघवेन्द्राय मङ्गलम् ॥१०९॥
आचार्यसार्वभौम श्रीराघवानन्दनिर्मिता ।
भूयान्मङ्गलमालेयं लोकमङ्गलकारिणी ॥११०॥

किसी भी प्रकार से किये गये एकमात्र भी उपकार से संतुष्ट होनेवाले धर्म के स्वरूप को यथार्थवत् जाननेवाले तथा कृतज्ञ श्रीरामचन्द्रजी का मंगल हो ॥१०८॥

जनों द्वारा किये सैकड़ों अपराधों को भी आत्मीय जन होने के नाते स्मरण नहीं करते हैं ऐसे क्षमा के महासमुद्र श्रीराघवेन्द्रजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०९॥

श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्दसम्प्रदाय) के २१ वें आचार्य दुर्वादध्वान्त मार्तण्ड सिद्ध सम्राट् जगद्गुरु श्रीराघवानन्दा -चार्य-आचार्य सार्वभौम प्रणीत यह श्रीराघवेन्द्र मंगल माला लोगों को यानी पाठक वर्ग को मंगल करनेवाली हो ॥११०॥

इत्यानन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्य

श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यप्रणीता

卐 बालबोधिनी 卐

समाप्ता

श्रीरामार्पणमस्तु

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐